नवोदय विद्यालय जगदलपुर, जिला बस्तर (छत्तीसगढ़)

बस्तर लोक नृत्य

1. नृत्य का नाम – बस्तरिया हल्बी परब नृत्य
2. गीत के बोल – नदी खड़े – खड़े झलपों लाटा रे
3. निर्देशन – संगीत निर्देशक – प्रमोद केशकर (संगीत शिक्षक) जवाहर नवोदय विद्यालय बस्तर,

नृत्य निर्देशक–राकेश यादव (हल्बी कलाकार)

कलाकार	–	नृत्य	–	08 लड़के	08 लड़कियॉ
		गीत	–	02 लड़क	02 लड़कियॉ

वाद्य यंत्र – 05 लड़के कुल 25 छात्र/छात्राएँ इस नृत्य में सम्मिलित है।
(गीत के अनुसार नदी के किनारे–किनारे एक तरह की खरपतवार फैली हुई है जिसे बस्तर के आदिवासी झलपों लाटा कहते है। इस घास (खरपतवार) की नोक (फॉस) टेंगना मछली के कॉटे के समान है।)

परब नृत्य

यह नृत्य बस्तरवासियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर आयोजित किया जाता है। यह नृत्य पुरूष तथा स्त्रीयॉ दोनों द्वारा समूह में प्रस्तुत किया जाता है। यह बस्तर का लोक नृत्य बस्तरवासियों द्वारा अपनी खुशी व्यक्त करने के लिये विभिन्न अवसरों जैसे शादी के अवसर,त्यौहारों और फसल कटाई इत्यादि अवसरों पर आयोजित किया जाता है।

इस नृत्य में लोग पारंम्परिक वेशभूषा तथा पारंम्परिक वाद्य यंत्रों जैसे– नंगाड़ा, तुड़बुड़ी, मॉदर, आदि का उपयोग किया जाता है। इस नृत्य को करने का एक मात्र उद्देश्य उल्लास एवं खुशी प्रदर्शित करना होता है। इस नृत्य को करते समय लोग बीच में आग जलाकर उसके चारों ओर स्त्री और पुरूष समूह में नाचते है। इस वक्त वे अपने अराध्य देवी–दंतेश्वरी माई का स्मरण करते है।

इस नृत्य को करते समय यहॉ के आदिवासी अपने सारे दुःख भुलकर तथा गॉव में एक जुट होकर एकता का परिचय देते हुए तथा अपने साम्प्रदायिक सद्भावनाओं को प्रदर्शित करते हुए इसे एक त्यौहार के रूप में मनाते है।

यह नृत्य हमें सारे दुःखों को भुलाकर सदैव खुश रहने का संदेश देता है।

श्री प्रमोद केशकर (संगीत शिक्षक)
जवाहर नवोदय विद्यालय
जगदलपुर
जिला –बस्तर (छत्तीसगढ़)